

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट, जॉन इलियट, सत्र 3, द इलियट बाइबल, किंग फिलिप्स वॉर (1675), और स्टार्टिंग ओवर, जॉन इलियट को अंतिम श्रद्धांजलि © 2024 टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा जॉन एलियट, 1604-1690, भारतीयों के प्रेषित पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 3 है, एलियट बाइबिल, 1663, दूसरा संस्करण, 1685, किंग फिलिप का युद्ध, 1675, और फिर से शुरू करना, और फिर अंत में, जॉन एलियट को अंतिम श्रद्धांजलि।

मैसाचुसेट्स, रॉक्सबरी, मैसाचुसेट्स और नैटिक में भारतीयों के प्रेषित, 1604 से 1690 तक जॉन एलियट के जीवन और कार्य पर हमारे तीसरे सत्र में आपका स्वागत है।

हमारे पहले सत्र में, हमने बोस्टन के स्टेट हाउस में मौजूद भित्तिचित्रों में उनकी महत्वहीनता को देखा, जो बीकन स्ट्रीट पर भी है, संगमरमर में उकेरे गए, मेफ्लावर कॉम्पैक्ट के साथ रखे गए, और फिर हार्वर्ड विश्वविद्यालय की स्थापना के स्तर तक। हमने उनकी शुरुआत व्हिटफोर्ड से की, जहाँ उनका जन्म 1604 में हुआ था, नाज़िंग तक, जहाँ उन्होंने अपना बचपन 10 साल तक बिताया, और फिर 14 साल की उम्र में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय तक, और फिर लगभग 1622 में वहाँ से स्नातक किया। तब से, बीच में कई साल थे, और वह जाहिर तौर पर एक मंत्री बन गए, उन्हें नियुक्त किया गया, और फिर लिटिल बैडों में थॉमस हुकर के घर चले गए।

थॉमस हुकर फिर यूरोप जाता है और फिर बोस्टन और नई दुनिया में जाता है। इलियट लगभग एक साल बाद, 1631 में, लॉयन जहाज पर सवार होकर बोस्टन हार्बर जाता है, और फिर बोस्टन के पहले चर्च में जाता है, जहाँ वह जॉन विल्सन की जगह मंत्री के रूप में काम करता है, जो यह देखने के लिए इंग्लैंड वापस जा रहा था कि क्या वह अपनी पत्नी को यहाँ आने के लिए मना सकता है। उन्होंने बोस्टन के पहले चर्च में एक साल तक काम किया, जो कॉमनवेल्थ स्ट्रीट पर बोस्टन गार्डन के ठीक बाहर है, जो आज भी वहाँ मौजूद है।

फिर, वह रॉक्सबरी चला गया, जहाँ नाज़िंग के वे लोग, जिनसे उसने वादा किया था, उसके बचपन का समूह, और उसका अपना परिवार आकर रॉक्सबरी में बस गया। इसलिए वह बोस्टन में एक साल रहने के बाद रॉक्सबरी चला गया, जहाँ उसने मूल रूप से अपना बाकी जीवन बिताया। इसलिए, 1 से 27, 0 से 27 तक, वह इंग्लैंड में था।

वह 28 साल की उम्र में एक साल के लिए यहां आते हैं और फिर 28 साल से लेकर 86 साल की उम्र तक वे रॉक्सबरी में रहते हैं। हमने रॉक्सबरी में उनके 12 साल के कार्यकाल को भी देखा, जहां उन्होंने चर्च पर ध्यान केंद्रित किया। उनके छह बच्चे थे, हन्ना ममफोर्ड, वे शादीशुदा थे, वह यहां आई और वे शादीशुदा थे और उनके छह बच्चे थे।

1640 के दशक के आसपास, जब वे 43 या उसके आसपास के थे, उन्होंने भारतीय भाषा सीखना शुरू किया और भारतीयों के लिए उनका जुनून था। और 1646 में, फिर वे गए, और यह हमारा दूसरा सत्र था, वाबन के विग्वम में, जहाँ 1646, अक्टूबर में, वे गए और मूल रूप से उन लोगों को अल्गोकिन भाषा में उपदेश देना शुरू किया, और न्यूटाउन या नॉनटम में भारतीय लोगों को, जैसा कि तब कहा जाता था, या न्यूटन, जिसे आज कहा जाता है। फिर, मूल रूप से, भारतीयों ने उनसे सवाल पूछे, और उन्होंने वहाँ एक पखवाड़े तक उपदेश दिया।

हर दूसरे हफ्ते, वह रॉक्सबरी से न्यूटन क्षेत्र में जाता था। और फिर मूल रूप से, उन्होंने कुछ ज़मीन मांगी, और उन्होंने उन्हें गवर्नर बोर्ड और जो कुछ भी दिया, और कोर्ट, वहाँ के जनरल कोर्ट ने उन्हें नैटिक में ज़मीन दी। और इस तरह नैटिक उनका पहला भारतीय, प्रार्थना करने वाला भारतीय गाँव बन गया।

और जैसा कि हमने कहा, उन्होंने 10, 50 और 100 के समूहों के साथ गांव की स्थापना की और फिर भारतीयों को धर्मशिक्षा देना शुरू किया। और यह लगभग 1650 की बात है जब नैटिक ऑनलाइन आए। और फिर, लगभग 1660 में, यानी 10 साल बाद, उन्होंने पहला चर्च स्थापित किया।

दूसरे शब्दों में, वह भागकर नहीं आया; उसने बस चर्च ढूँढ़ लिया। उन्होंने इमारत खड़ी कर दी; उन्होंने चार्ल्स नदी पर पुल बना दिया, सभी तरह की व्यवस्थाएँ थीं, उन्होंने एक मीटिंग हाउस बनाया, उन्होंने उसके रहने के लिए एक जगह बनाई ताकि वह वहाँ रुक सके और उन्हें सिखा सके। और वह नैटिक में था।

तो, नैटिक एक तरह से एक ऐसी जगह थी। और आज भी, मुझे लगता है कि हमने चर्च में मौजूद चट्टान, इलियट चर्च, और फ्रीबेकन लाइब्रेरी, और नैटिक में मौजूद ऐतिहासिक ओबिलिस्क के कुछ वीडियो और कुछ चीज़ें दिखाई हैं। नैटिक पोस्ट ऑफ़िस में अब जॉन इलियट की एक बेहतरीन भित्तिचित्र भी है।

और फिर, लगभग 1674 में, उन्होंने और डैनियल गूकिन ने चारों ओर यात्रा की और दौरा किया; उन्होंने मूल रूप से नैटिक मॉडल लिया और इसे 14 गांवों तक बढ़ाया, प्रार्थना की कि भारतीय गांवों की स्थापना की जाए। 1674 में, उन्होंने और डैनियल गूकिन ने चारों ओर यात्रा की और उनमें से प्रत्येक गांव का दौरा किया। और अब, हम आज, 1675 को देखने जा रहे हैं, और यह महत्वपूर्ण है।

यह किंग फिलिप का युद्ध है। और इसके बाद जो कुछ भी टैंक में गया, वह यही है। यह किंग फिलिप का युद्ध है जिसने सब कुछ उलट-पुलट कर दिया।

और हमें इसके बारे में बात करनी होगी। लेकिन ऐसा करने से पहले, हम इलियट की सबसे बड़ी उपलब्धि के बारे में बात करना चाहते हैं। और वह है इलियट बाइबिल या अल्गोकिन या वैम्पानाग बाइबिल, जो 1663 में प्रकाशित हुई थी।

और इसलिए, यह पहली बार उनकी भाषा में बाइबल थी, और मुझे लगता है कि यह आखिरी बार था जब ऐसा किया गया था। और इसलिए, एलियट ने ऐसा किया। और इसलिए, मैं बस यह देखना चाहता हूँ; हम यह देखना और तौलना चाहते हैं कि उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि हिब्रू और ग्रीक और अंग्रेजी से भारतीय भाषा में बाइबल का अनुवाद करना था, जो एक अत्यंत कठिन भाषा है।

और उन्होंने ऐसा कई वर्षों की प्रक्रिया में किया, 1663 में। यह उनके उपदेश देने के लगभग 14 साल बाद की बात है, और वे भारतीयों को उपदेश देते रहे हैं और इसी तरह के काम करते रहे हैं। तो चलिए मैं आपको बताता हूँ कि थॉमस थोरोगुड ने 18 जून और 18 जून, 1653 को क्या कहा था।

यह तब हुआ जब एलियट ने थॉमस थोरोगुड को पत्र लिखकर उन्हें बाइबिल को उनकी भाषा में अनुवाद करने की अपनी इच्छा बताई। इसलिए, एलियट ने 1653 में थॉमस थोरोगुड को लिखा, उद्धरण, मेरी बहुत इच्छा और चाहत है, अगर ईश्वर की इच्छा हो, तो हमारी अंग्रेजी सिखाई जाए, हमारी भारतीय भाषा पवित्र शास्त्रों के अनुवाद द्वारा पवित्र हो। लेकिन मुझे डर है कि मेरे दिनों में यह प्राप्त नहीं होगा।

दूसरे शब्दों में, वह 1653 को देखता है, और 10 साल बाद, वह बाइबल का काम पूरा करने जा रहा है, लेकिन वह इसे सिर्फ एक बहुत बड़ा काम मानता है। वह कहता है कि मुझे नहीं लगता कि यह मेरे दिनों में होने वाला है। वह कहता है कि मैं इस काम को जारी नहीं रख सकता क्योंकि मुझे रॉक्सबरी में और अलग-अलग जगहों पर भारतीयों के बीच अपने मंत्रालय में भाग लेने की ज़रूरत है।

इसलिए, उन्होंने इन सभी भारतीय गांवों की यात्रा की। और उन्होंने कहा, मेरा मतलब है, मुझे नहीं लगता कि मैं इसे पूरा कर पाऊंगा। मैं इसे अपने जीवन में नहीं देख पाऊंगा।

लेकिन यही उनका जुनून था। उन्होंने मूल रूप से एक धर्मशिक्षा और व्याकरण का अध्ययन किया। और आपको याद रखना चाहिए कि यह व्यक्ति लगभग 40, 40 साल का है और इस अलगाव भाषा को सीखने की कोशिश कर रहा है, जो एक बहुत ही कठिन भाषा है।

और इसलिए वह बीस साल के किसी युवा की तरह नहीं है जो यह सब सीख रहा है। और उसने इस पर लगभग 12 साल तक काम किया। भारतीय प्रश्न जिसने उसे प्रेरित किया वह था कि मैं स्वर्ग कैसे जा सकता हूँ? और उसने मूल रूप से कहा, आप जानते हैं, बाइबल पढ़ें, यीशु जो कहते हैं उसे सुनें, और प्रार्थना करें।

और उसे एहसास हुआ कि वे अपनी भाषा में बाइबल नहीं पढ़ सकते थे। उनके पास कोई लिखित भाषा नहीं थी। कोई साहित्य नहीं था; कुछ भी नहीं था।

और इसलिए, मूल रूप से, उन्हें शुरुआत से ही शुरुआत करनी पड़ी। और इसलिए, यह एक जबरदस्त बात है। उनके पास अनुवाद थे जिन्हें उन्होंने पहले कैटेचिज़्म के लिए विकसित किया था।

उन्होंने प्रभु की प्रार्थना की, जिसे आप जानते हैं, जब आप चीजों को विकसित कर रहे होते हैं, तो प्रभु की प्रार्थना से ही आप शुरुआत करते हैं, एक धर्मशिक्षा, और फिर 10 आज्ञाएँ। और ये महत्वपूर्ण आधारभूत बातें थीं। और उन्हें कोकोनू नामक भारतीय की मदद मिली, जो उनके घर में था, और उन्होंने मूल रूप से शिक्षण पर काम किया।

कोकोनू ने उन्हें भाषा सिखाने का काम किया। कोकोनू अंग्रेजी और अल्गोंक्विन दोनों ही भाषाएँ जानते थे और उन्होंने अनुवाद प्रक्रिया में उनकी मदद की। 1649 में, वाबन के विग्वम में अपने उपदेशों के तीन साल बाद, वे भारतीय स्कूलों की मांग कर रहे थे, भारतीय स्कूलों की तत्काल आवश्यकता थी।

उन्होंने कहा, "मैं बहुत चाहता हूँ कि धर्मग्रंथ के कुछ हिस्सों का अनुवाद उनकी भाषा में किया जाए और उनकी भाषा में कुछ प्राइमर छापे जाएँ, जिससे उन्हें पढ़ना सिखाया जा सके। इसलिए, वे ऐसी सामग्री विकसित कर रहे थे, जिससे वे अपनी भाषा नहीं पढ़ पाएँगे। इसे कभी लिखा नहीं जा सकता था।"

इसलिए, उन्हें अपनी भाषा पढ़ना सिखाना पड़ा। और ऐसा काम परेशानी भरा और खर्चीला होगा। और मेरे पास इसके लिए खुद के साधन नहीं हैं।

और इसलिए मूल रूप से, वह कहते हैं, मैं यह सब नहीं कर सकता, लेकिन वह जानते थे, और वह उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए बस कदम दर कदम आगे बढ़ रहे थे। 1658 में छपाई की लागत उनके लिए एक ब्लॉक थी। उन्होंने लिखा कि ईश्वर की पूरी किताब का अनुवाद उनकी अपनी भाषा में किया गया है।

वह इसे संशोधित करना, लिपिबद्ध करना और छापना चाहता था। काश, भगवान ऐसा कर पाते कि किसी न किसी तरह से इसे छपा जा सकता। और उसके पास इसे छापने के लिए न तो धन था और न ही क्षमता।

और इसलिए, यह एक बड़ा ब्लॉक था, लेकिन उसने इसे पूरा कर लिया था। और इसलिए, वह इसके बारे में वास्तव में उत्साहित था। यह कभी कैसे छप सकता था? उसका वेतन बहुत कम था और वह इसके लिए भुगतान नहीं कर सकता था।

1651 में इंग्लैंड को लिखे एक पत्र में उन्होंने कहा, "बहुत दुख के साथ, मुझे अपने जीवनकाल में अपनी बाइबल छपते हुए देखने की कोई उम्मीद नहीं है। और इसलिए, उन्हें एहसास हुआ कि वे इसे नहीं कर सकते। उन्होंने सोसाइटी फॉर द प्रोपेगेटिंग ऑफ द गॉस्पेल को पत्र लिखकर मदद मांगी।

सितंबर 1661 में, कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स में अल्गोंक्विन भाषा में नया नियम मुद्रित किया गया था। इसके लगभग तीन साल बाद, 1663 में, पूरी बाइबल मुद्रित की जाएगी। इसे कैम्ब्रिज में मुद्रित किया जाएगा।

कैम्ब्रिज वह जगह है जहाँ आज हार्वर्ड यूनिवर्सिटी है। और इसे वास्तव में भारतीय कॉलेज के तहखाने में छापा जाएगा। यह हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की पहली ईंट की इमारत थी।

उस तहखाने में, उन्होंने प्रिंटिंग प्रेस और सैमुअल ग्रीन को रखा, जो उस पीढ़ी में इन सभी चीजों को छापने वाले प्रसिद्ध प्रिंटर का प्रसिद्ध नाम था। ये पहली पीढ़ी के लोग हैं। इन लोगों के पास खाने के लिए मुश्किल से पर्याप्त भोजन और सामान और चीजें थीं।

इसलिए, सैमुअल ग्रीन द्वारा इस प्रिंटिंग प्रेस को चालू करना एक बड़ी बात थी। और फिर उन्होंने मार्माड्यूक जॉनसन को बुलाया, और मार्माड्यूक जॉनसन को बोस्टन और कैम्ब्रिज आने के लिए तीन साल का अनुबंध मिला, और मूल रूप से तीन साल के लिए, यह इलियट बाइबिल छापनी थी जो 1663 में छपी थी। सादे, मजबूत चमड़े में दो सौ प्रतियां छपी गईं और तुरंत भारतीयों के बीच प्रचलन में आ गईं।

जब इलियट नैटिक गए और उनके हाथों में बाइबल देखी तो उनकी खुशी वैसी ही थी जैसे साइमन परमाणु बम में हमसे मिलने आए थे। और याद कीजिए साइमन, जब उन्होंने शिशु यीशु को उठाया तो ऐसा लगा, यह मेरा जीवन है, यार। यह ल्यूक अध्याय दो में शिमोन के एक उद्धरण की तरह था, अब, हे प्रभु, हम तेरे सेवक शांति से विदा हों क्योंकि मेरी आँखों ने तेरा उद्धार देखा है।

और ऐसा ही एलियट के साथ हुआ जब उसने देखा और वास्तव में उसके हाथों में बाइबल थी, तो उसने कुछ भी नहीं से एक तरह से नए सिरे से अनुवाद किया था, बस अनुवाद और अन्य चीजों के साथ काम कर रहा था। यह ऐसा था जैसे यह उसके जीवन की उपलब्धि थी। और अब मेरी आत्मा को शांति से विदा हो।

तो, सैमुअल ग्रीन इसमें शामिल थे। सैमुअल ग्रीन 1628 में अपने साथ लाए थे; वहां एक प्रिंटिंग प्रेस थी, 1628 प्रिंटिंग प्रेस, जिसमें सैमुअल ग्रीन यह सब छाप रहे थे। 1654 में एक नई प्रेस भेजी गई, और इसे मार्माड्यूक जॉनसन को सौंपा गया।

तो आपके पास सैमुअल ग्रीन, मार्माड्यूक जॉनसन थे, और फिर दूसरे थे प्रिंटर जेम्स। और मैं उनसे दूसरे के बारे में बात करूंगा। एक भारतीय था; यह भारतीय कॉलेज था, और यह भारतीय कॉलेज में ही था जहाँ यह छपाई चल रही थी।

प्रिंटर जेम्स नाम का एक आदमी है, और वास्तव में, वे उसे जेम्स प्रिंटर कहते हैं; उसने अपना अंतिम नाम यही रखा। और वह एक भारतीय था जिसने वास्तव में यह सुनिश्चित करने में मदद की कि यह सही है और इस तरह की चीजें। और वह शुरुआती नायकों में से एक होगा, वह भारतीय जिसने वास्तव में बाइबल को छापने में मदद की।

उन्होंने 1663 में छपाई की; इलियट की बाइबिल की एक हजार प्रतियां छपीं, एक हजार प्रतियां। उन्होंने, मुझे लगता है, 26 प्रतियां वापस इंग्लैंड भेजीं, और राजा जेम्स को यह भेंट की गई। 1658 में, इलियट ने सोसायटी के खजाने को लिखा, उद्धरण, मैं आपको इस समय किसी भी चीज से परेशान नहीं करूंगा, इस समय के एक काम को छोड़कर, भारतीय भाषा में बाइबिल की छपाई

को छूते हुए, ताकि आप खुद को किसी ईमानदार युवा को काम पर रखने के लिए प्रेरित कर सकें, जिसके पास रचना करने का कौशल हो, और जितना अधिक कौशल हो, काम का एक और हिस्सा उतना ही बेहतर होगा।

उसे अपने नौकर के रूप में भेजो और उसे वहाँ उसकी इच्छा के अनुसार भुगतान करो और भुगतान प्राप्त करो और उसे यहाँ न्यू इंग्लैंड में हार्वर्ड कॉलेज के प्रेस में तुम्हारी सेवा करने दो और कॉलेज के प्रिंटर, सैमुअल ग्रीन के अधीन काम करो और भारतीय भाषा में बाइबिल छापने में मदद करो और उसके साथ कागज का एक सुविधाजनक स्टॉक भेजो ताकि सब कुछ शुरू हो सके। तो, वास्तव में, उन्होंने भेजा; मुझे लगता है कि यह कागज के सौ रीम या कुछ इस तरह का था, और इसे प्रिंट करने के लिए बस कागज की जरूरत थी। आप कल्पना कर सकते हैं कि ये लोग पहले बसने वाले हैं।

और इसलिए, उनके पास बहुत ज़्यादा कागज़ और ऐसी चीज़ें नहीं हैं जो बनाई जाती हैं। और इसलिए, यह दिलचस्प है। बेंज और पिकोविज़ की एक हालिया किताब में, मैंने शायद उनके नामों का गलत उच्चारण किया, लेकिन उसमें कहा गया है कि एक हज़ार साल के दौरान, अल्फ़ियस के समय से, यानी 311 से 383 तक, गॉथिक वर्णमाला का निर्माण हुआ।

इसलिए, 300 के दशक में, अल्फ़ियस ने इस गोथिक लिपि, इस गोथिक वर्णमाला को विकसित किया। इन लोगों ने जो देखा वह यह है कि इलियट एकमात्र मिशनरी थे जिन्होंने शास्त्रों को पढ़ाने और प्रचार करने के उद्देश्य से एक अलिखित भाषा से एक नई वर्णमाला तैयार की। इसलिए, एक हज़ार साल से ज़्यादा समय हो गया था जब किसी ने जो सुना था उसका वर्णन करने के लिए वर्णमाला विकसित की थी। भारतीयों को कुछ नए अक्षर बनाने पड़े।

और इसलिए, जब मैं इस चीज़ को स्कैन कर रहा था, तो मुझे दो शून्य मिले, और मैंने देखा कि वे एक दूसरे के करीब थे। थोड़ी देर बाद, मुझे एहसास होने लगा कि वे वास्तव में एक साथ संपीड़ित दो शून्य थे। और यह उस ध्वनि के लिए उनके नए प्रतीकों में से एक था जिसे वह अल्फ़ोकिन भाषा में सुन रहे थे।

इसलिए, उन्होंने नए अक्षर बनाए जो इन लोगों की आवाज़ को पकड़ सकें, जो एक हज़ार साल से नहीं किया गया था। और एलियट ने ऐसा किया। यह आश्चर्यजनक है कि उन्होंने क्या किया, लेकिन इसके लिए उनका जुनून।

सन् 1611 में, बेशक, किंग जेम्स संस्करण आया, 1611. अब हम सन् 1663 की बात कर रहे हैं। तो, यह लगभग 50 वर्ष बाद की बात है।

लेकिन किंग जेम्स संस्करण में 54 विद्वान थे और उन्हें सात साल लग गए, किंग जेम्स संस्करण में 54 विद्वान थे। इसे करने में उन्हें सात साल लगे। इलियट ने अपना काम 14 साल में पूरा किया; एक आदमी, जॉन इलियट ने पूरी बाइबिल का अल्फ़ोकिन तक अनुवाद किया, जो वैसे अंग्रेज़ी और ग्रीक और हिब्रू से कहीं ज़्यादा कठिन है।

और इसलिए, यह बहुत कठिन था। और फिर भी, 12 साल या 14 साल में, माफ़ कीजिए, वह वही करता है जो उन्होंने सात साल में किया था। तो, यह आश्चर्यजनक है।

एक व्यक्ति, इसके प्रति उसकी प्रतिबद्धता, उसका आत्म-अनुशासन, उसकी दृढ़ता, और इस पर दैनिक आधार पर काम करने की उसकी क्षमता। अब, कुछ अनुवाद संबंधी मुद्दे सामने आते हैं। जब भी आप संस्कृतियों और भाषाओं के बीच जाते हैं, तो आपके पास सांस्कृतिक अंतर होते हैं, और आपके पास भाषाई अंतर होते हैं।

और इसलिए जब भी आप इन दो भाषाओं के बीच जाते हैं, खासकर जब संस्कृतियाँ इतनी विविधतापूर्ण होती हैं, तो आप समस्याओं और कठिनाइयों का सामना करने जा रहे हैं, इसलिए जब आप भगवान की प्रार्थना से शुरू करते हैं, हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं, भगवान को पिता के रूप में सोचना वास्तव में भारतीयों के लिए बहुत ही विदेशी था। इसलिए, जब आप कहते हैं कि हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं, आपका नाम पवित्र हो, तो भगवान को अपने पिता के रूप में सोचने की यह धारणा उनके लिए एक वास्तविक सफलता थी।

और फिर हमारे अपराधों को क्षमा करें जैसे हम उन लोगों को क्षमा करते हैं जो हमारे या हमारे ऋणदाताओं के विरुद्ध अपराध करते हैं; हमारे ऋणदाताओं को क्षमा करें जैसे हम अपने ऋणदाताओं को क्षमा करते हैं। और भारतीयों के लिए, बदला लेना उनकी संस्कृति का एक बहुत बड़ा हिस्सा था। आपका क्या मतलब है कि मुझे अपने दुश्मन को माफ़ करना है? हम यहाँ ऐसा नहीं करते हैं।

और इसलिए, अपने शत्रुओं को, उनके अपराधों को क्षमा करने की यह बात बहुत बड़ी बात थी।

अब, मैं भजन संहिता की पुस्तक में जाता हूँ। भजन 23, प्रभु मेरा चरवाहा है। मुझे कुछ नहीं चाहिए। वह मुझे हरी चरागाहों और चीज़ों के पास लेटाता है। प्रभु मेरा चरवाहा है।

अपना सिर खुजाओ। चरवाहा क्या होता है? चरवाहा क्या होता है? वे नहीं जानते कि चरवाहा क्या होता है। वे शिकार करने जाते हैं, और वे शिकार करते हैं, आप जानते हैं, टर्की और हिरण और खरगोश और वे चीज़ों का शिकार करते हैं, बीवर, और वे चीज़ों का शिकार करते हैं, लेकिन वे नहीं जानते कि बकरियों और भेड़ों और बकरियों के झुंड का होना क्या होता है, कि आप चरवाहे हैं।

उन्हें इस बारे में कुछ भी पता नहीं था। और इसलिए, प्रभु मेरे चरवाहे हैं। भारतीयों और उनकी संस्कृति और चीज़ों के लिए इसका क्या मतलब है? बहुत, बहुत मुश्किल है।

और भी बहुत कुछ। तो, इनमें से कुछ चीज़ें ऐसी थीं जिनका सामना एलियट को करना पड़ा और इन सांस्कृतिक कठिनाइयों के साथ काम करना पड़ा। कॉटन माथेर ने यह किताब लिखी, *मैगनोलिया अमेरिकाना क्रिस्टी या क्रिस्टी अमेरिकाना*, मैं भूल जाता हूँ, 1702 में। कॉटन माथेर 1620, 1630 और 1640 के दशक में लोगों, पहली पीढ़ी के लोगों को देखता है और 1702 तक के इतिहास का वर्णन करता है।

और यह *मैग्रेलिया अमेरिकाना क्रिस्टी* या क्रिस्टी अमेरिकाना। कॉटन माथेर इस अंग्रेजी भाषा की कठिनाई के बारे में बात करते हैं। और वह बेबेल के टॉवर के साथ खेलते हुए एक तरह की चीज़ बनाता है।

उत्पत्ति 11 में बाबेल के टॉवर के साथ भाषा की उलझन को याद करें। और इसलिए कॉटन माथेर यह कहते हैं: उन्होंने एक बार कुछ राक्षसों को रखा था, और वह यह मजाक में कर रहे थे। कॉटन माथेर, अपनी पुस्तक में, यह मजाक में कर रहे हैं।

एक बार उसने कुछ राक्षसों को उनकी भाषाओं के कौशल पर काबू पाने के लिए प्रेरित किया और पाया कि वे लैटिन, ग्रीक और हिब्रू को बहुत अच्छी तरह से समझ सकते हैं। इसलिए, राक्षसों ने राक्षसों को नीचे गिरा दिया, और राक्षसों ने, अरे, उन्होंने लैटिन, ग्रीक और हिब्रू सीख ली। यह कोई समस्या नहीं है।

बहुत बढ़िया। वे थे। अमेरिकी मूल निवासियों की बोली से राक्षस पूरी तरह से चकित थे। दूसरे शब्दों में, वह जो कह रहा था वह यह है कि यह अल्वॉकिन, यह वैम्पानाग भाषा, इतनी कठिन है कि राक्षस इसे समझ नहीं पाए।

उन्हें ग्रीक, हिब्रू और लैटिन भाषाएँ तो आती थीं, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सकते थे। और श्री इलियट को अपना काम आसान या आकर्षक नहीं लगा होगा। और इसलिए वे कह रहे हैं कि यह भाषा वाकई कठिन है।

और मैं इसकी पुष्टि करूँगा। मैंने भाषा को देखा है। और फिर, आप जानते हैं, मेरे पास अक्कादियन है, मेरे पास उगरिटिक है, मेरे पास हिब्रू है, मेरे पास ग्रीक है, मेरे पास लैटिन और जर्मन है और ऐसी ही अन्य भाषाएँ हैं।

और यह भाषा मेरे द्वारा अब तक देखी गई किसी भी भाषा से कहीं ज़्यादा कठिन है। इसलिए हमने जाली समस्या से पहले बात की थी। इसलिए न्यायियों के अध्याय पाँच, श्लोक 28 में, डेबोरा और बाराक युद्ध के लिए निकले, और सीसरा और हासोर के राजा याबीन के राजा, अपने रथों के साथ उनसे मिलने आए।

और भगवान ने, मूल रूप से, बारिश की, और किशोन नदी में बाढ़ आ गई। और इसलिए सीसरा भाग रहा है। और फिर याबीन के सीसरा की माँ अपनी खिड़की से, अपनी जाली से बाहर देख रही है, ऐसा कहा जाता है, और वह जाली से बाहर देखती है कि उसका बेटा यहूदियों पर किए गए सभी लूट और उसके द्वारा प्राप्त की गई सभी लूट के साथ घर कब आ रहा है।

और इसलिए, वह जाली से बाहर देखती है। तो एलियट अनुवाद कर रहा है, और वह कहता है, आप इस शब्द जाली के साथ क्या करते हैं? मेरा मतलब है, उनके विगवाम में स्पष्ट रूप से कोई जाली नहीं है। और इसलिए उसने, उसने पूछा, आप जानते हैं, जिन लोगों के साथ वह अनुवाद कर रहा था, अच्छा, यह क्या है? और उसने वर्णन किया कि यह कैसा था।

और उन्होंने कहा, ठीक है, यह एक ईल फली की तरह है। और यह इस तरह था। याद रखें मैंने आपको बताया था कि जब उन्होंने चार्ल्स नदी और अन्य नदियों पर काम किया था, तो उन्होंने उन्हें दो तरफ से बांध दिया था और बीच में एक छेद छोड़ दिया था।

और फिर उन्होंने लकड़ी की पट्टियों और अन्य चीजों से बनी एक टोकरी रखी ताकि वे मछलियाँ पकड़ सकें जो तब मजबूर होकर नीचे की ओर तैरकर आ जाती थीं, और वे उन्हें टोकरी में पकड़ लेते थे। इस तरह वे मछलियाँ पकड़ते थे। और एलियट ने कहा, आप जानते हैं, वह, एलियट वास्तव में एक अद्भुत व्यक्ति था।

उसे बस यही लग रहा था कि यह ईल पॉड जाली में खिड़की से बाहर देख रही यह माँ नहीं है। यह मेल नहीं खा रहा था। और इसलिए उसे नहीं पता था कि इसके साथ क्या करना है।

तो, उन्होंने लैटिस उट, लैटिस उट शब्द का इस्तेमाल किया। और उन्होंने लैटिस शब्द लिया और उसे उट पर समाप्त किया, जो एक भारतीय अंत था और उन्होंने लैटिस शब्द पर वह भारतीय अंत लगा दिया। और यही उन्होंने किया।

तो, जब वह संस्कृतियों के बीच जा रहा है, तो उसे एक अलग नई वर्णमाला बनानी है जो एक हज़ार साल में नहीं बनाई गई थी। लेकिन उसे संवाद करने के लिए यहाँ संस्कृतियों के बीच जाते समय शब्द भी बनाने पड़ते हैं। और वह वास्तव में संवाद नहीं कर सकता क्योंकि वे नहीं जानते कि जाली क्या है।

और इसलिए वह, वह इस तरह के शब्द रखता है। फिर से, मैंने बताया कि हमारे पास हिब्रू में वही समस्या थी जो आधुनिक हिब्रू में थी, जिसे 20वीं सदी में विकसित किया गया था। फिर से, कैसेट के लिए शब्द में बाइबल पर आधारित कोई प्राचीन शब्द नहीं था।

आप बाइबल कैसेट में क्या कहते हैं? आप ऐसा नहीं कह सकते। और जाहिर है, उस समय कोई कैसेट नहीं था। मेरा मतलब है, उनके पास इंटरनेट हो सकता था, लेकिन ओह, यह सही है।

अल गोर ने तब तक इंटरनेट का आविष्कार नहीं किया था। इसलिए बाइबल के समय में उनके पास इसे कैसेट या उस तरह की किसी इलेक्ट्रॉनिक चीज़ के रूप में नहीं था। इसलिए आधुनिक समय में, वे इसे बस कैसेटिम कहते हैं।

इस पर हिब्रू भाषा का अंत रखें। और इसी तरह वे कुछ नए शब्दों और चीज़ों के साथ काम करते हैं। आपके पास इंटरनेट जैसी चीज़ें होंगी; आपके पास सोशल मीडिया जैसी चीज़ें होंगी और ऐसी ही चीज़ें होंगी।

ये सभी नए शब्द हैं। और इस तरह की चीज़ों का कोई पुराना पूर्वज नहीं है। इसलिए आप अंततः शब्द गढ़ने ही जा रहे हैं।

अब, शब्द बहुत लंबे हैं। और मेरे पास यहाँ एक शब्द है, और इसका मतलब है हमारा सवाल। जैसा कि मैं इसे पृष्ठ पर देखता हूँ और मैं इसे आपको पावरपॉइंट से दिखाने की कोशिश करूँगा, यह शब्द, एक शब्द का मतलब है हमारा सवाल, कम से कम 30 से 40 अक्षर लंबा होना चाहिए।

इसमें एक पूरी लाइन लगती है। और वास्तव में, मैंने देखा कि एलियट की एक बाइबल में, वह एक लाइन, पूरी लाइन, एक शब्द से ली गई थी। तो, यह एक तरह की अविश्वसनीय भाषा है।

वे बहुत, बहुत लंबे शब्द हैं। वे शब्दों और अंत को लेते हैं, उन्हें जोड़ते हैं, सर्वनाम और विशेषण के लिए अलग-अलग शब्द रखने के बजाय, वे मूल रूप से उन्हें एक साथ जोड़ते हैं, जो इन बहुत लंबे शब्दों के लिए समझ में आता है, जैसे कि 30, 40 अक्षर लंबे। संज्ञाएँ, आप संज्ञाएँ कहते हैं, मेरा मतलब है, आप जानते हैं, लैटिन, ग्रीक, हिब्रू, जर्मन में जाएँ, उन्हें, आप जानते हैं, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग नपुंसक संज्ञाएँ मिलती हैं।

ठीक है। लगभग हर भाषा में पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग संज्ञाएँ होती हैं। भारतीयों ने ऐसा नहीं किया।

उनके पास सजीव बनाम निर्जीव था। और इसलिए, यह संज्ञाओं को सजीव और निर्जीव के रूप में सोचने का एक बिल्कुल नया तरीका था। एलियट ने इस चीज़ को अपनाया।

यह आदमी एक क्लासिक था। यह आदमी एक अच्छा भाषाविद् था। और उसने जो कुछ भाषाई काम किया वह अपने समय से बहुत, बहुत, बहुत आगे था। और फिर भी, क्योंकि वह शास्त्रों को सटीकता के साथ संप्रेषित करना चाहता था, उसने इस सूक्ष्म अंतर, बारीकियों को पकड़ा, कि यह पुरुष और महिला नहीं है, यह सजीव और निर्जीव के बीच है।

इसलिए, वह अंत को चुनता है, और सजीव के लिए अगस्त अंत का अर्थ बहुवचन है। और निर्जीव के लिए, यह मूल रूप से बहुवचन के अंत में राख है। उनके पास यहोवा शब्द नहीं है।

तो आप इसे पढ़ते समय देखेंगे कि अगर आप उत्पत्ति के संदर्भ में बाइबल पर नज़र डालेंगे, तो मैं कल्पना करता हूँ कि उत्पत्ति अध्याय दो, और अन्य स्थानों पर, हमारे जैसे भगवान, कैपिटल एल, कैपिटल ओ, कैपिटल आर, कैपिटल डी, जब भी आप इसे इस तरह कैपिटल में देखते हैं, सभी कैपिटल, एल, एल, ओ, आर, डी कैपिटल में, छोटे कैपिटल में, इसका मतलब है कि यह वास्तव में यहोवा या याहवे के लिए एक प्रतिनिधि है। ठीक है। भारतीयों के पास ऐसा नहीं था।

और इसलिए उन्होंने जो किया वह यह था कि उन्होंने सिर्फ यहोवा शब्द का इस्तेमाल किया और उसे वहाँ डाल दिया। और इसलिए आप देखेंगे, आप पढ़ते हुए देखेंगे, और अचानक, धमाका, यहोवा वहाँ आ जाएगा। और आप कहेंगे, यह वहाँ कैसे आ गया? उनके पास इसके लिए कोई शब्द नहीं था।

इसलिए, उन्होंने मूल रूप से परमेश्वर यहोवा के नाम का इस्तेमाल किया। इसमें कोई भी क्रिया नहीं थी। क्रिया वास्तव में कई भाषाओं में बहुत महत्वपूर्ण है।

शब्द है, उनके पास है या था या बन गया के लिए कोई शब्द नहीं था। इसलिए, यह वास्तव में कठिन था। आप कैसे कहते हैं, जब भगवान निर्गमन 3:14 में कहते हैं, मैं वह हूँ जो मैं हूँ? आप इसे कैसे कहते हैं? जब उनके पास हूँ, एक है क्रिया है।

इसलिए इलियट को यहाँ बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ा, और उन्होंने एक हज़ार प्रतियाँ छापीं। और अब जो होने जा रहा है, मैं बस आगे की बात करता हूँ। 1675 में, हमने राजा फिलिप के युद्ध और लोगों पर उनके द्वारा किए गए विनाश और भारतीयों और बसने वालों के बीच संबंधों के बारे में बात की।

1675 में, जब तनाव बढ़ गया और वे एक-दूसरे से लड़ने लगे, तो सबसे पहले जो काम करना था, वह था एलियट की बाइबल को जलाना। और इसलिए बाइबल का 1663 संस्करण, उनमें से अधिकांश आग की लपटों में जलकर नष्ट हो गए और उन्हें फाड़ दिया गया और बसने वालों द्वारा पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया, जो उस समय भारतीयों से नफरत करते थे क्योंकि वे, आप जानते हैं, बहुत से लोगों और खुद भारतीयों को मार रहे थे, क्योंकि उन्हें बसने वाले पसंद नहीं थे और यह बाइबल अंग्रेजों के साथ उनके संबंध को दर्शाती थी। इसलिए दोनों पक्षों ने बाइबल जला दी, एलियट की बाइबल।

और इसलिए, 1663 की बाइबलें लगभग नहीं बचीं। अब यह आश्चर्यजनक है कि गॉर्डन कॉलेज ने अपने अभिलेखागार में, डेमन डिमाउरो ने इनमें से कुछ चीज़ों को खोज निकाला है, जैसा कि सारा सेंट जर्मेन ने किया है। इन दो लोगों ने पाया कि गॉर्डन कॉलेज के पास एलियट की बाइबल का 1663 संस्करण था।

क्या आप समझते हैं कि उनमें से एक हज़ार छपी थीं, उनमें से ज़्यादातर नष्ट हो गईं? यह एक बहुत ही दुर्लभ किताब है। और उन्होंने पिछले कुछ महीनों में ही पूरी किताब को फिर से बाँधा है।

और यह मैसाचुसेट्स के वेनहम में गॉर्डन कॉलेज के अभिलेखागार में एक आश्चर्यजनक खोज है, आज भी, जहाँ मुझे 20 वर्षों तक पढ़ाने का सौभाग्य मिला। तो, यहाँ क्या होता है? खैर, माफ़ करें। ठीक है।

तो, बाइबल की एक प्रति इंग्लैंड वापस चली गई, 26 प्रतियाँ, और एक प्रति राजा जेम्स के पास गई, और यह एक तरह से दिलचस्प बात है। दूसरा संस्करण 1685 में छपा होगा। यह राजा फिलिप के युद्ध के 10 साल बाद की बात है।

जाहिर है उन्हें और बाइबल और अन्य चीज़ें लाने की जरूरत थी। और इसलिए, सैमुअल ग्रीन को फिर से नियुक्त किया गया। जेम्स प्रिंटर मूल भारतीय व्यक्ति थे जिन्होंने कैम्ब्रिज में हार्वर्ड विश्वविद्यालय के भारतीय कॉलेज में छपाई में मदद की थी।

वह दूसरे संस्करण की प्रूफिंग में भी शामिल थे। इलियट को दूसरे संस्करण के लिए पैसे जुटाने में डिकेंस की तरह समय लगा। और, आप जानते हैं, जाहिर है, उन्होंने 1663 में एक संस्करण बनाया था।

वह एक हीरो था। हर कोई कहता था कि उसने जो किया वह अविश्वसनीय था। किंग फिलिप के युद्ध के बाद, बसने वालों ने कहा, अरे यार, हम नहीं जानते कि हम फिर से ऐसा करना चाहते हैं या नहीं।

और इसलिए मूल रूप से, भारतीयों को अंग्रेजी पढ़ना सीखने दें, उन्हें अंग्रेजी पढ़ना सीखने दें, और हम सिर्फ अंग्रेजी बाइबिल वाली चीजें करेंगे। और इलियट अभी भी इस पर जोर दे रहे थे क्योंकि उन्होंने कहा, नहीं, उन्हें अपनी भाषा में बाइबिल चाहिए। लेकिन उनके पास कोई पैसा और चीजें नहीं थीं, और वह पैसे नहीं जुटा पाए।

उसने पैसे जुटाने की कोशिश की, लेकिन वह कहीं नहीं जा रहा था। और अंत में, वह उनसे बहस कर रहा था या बहस नहीं कर रहा था। वह उन्हें मनाने की कोशिश कर रहा है।

और उन्हें मूल रूप से न्यू टेस्टामेंट करने के लिए राजी किया गया था। लेकिन अगर आप भारतीयों के बारे में कुछ जानते हैं, तो वे पुराने नियम की कहानियों को पसंद करते हैं। और अगर आप कुछ भारतीयों के नाम देखें, तो यह सिर्फ मेरा अवलोकन है; उन्होंने जो नाम रखे उनमें से कई पुराने नियम के पात्र थे।

और इसलिए उन्हें पुराने नियम और वे कहानियाँ बहुत पसंद हैं जो वास्तव में उनसे जुड़ी हुई हैं। भारतीय लोग कहानी सुनाने और दूसरी चीजों में रुचि रखते थे। और इसलिए इलियट को यह सब पता था, और उसने कहा, नहीं, मुझे पूरी बाइबल चाहिए।

मैं सिर्फ नया नियम नहीं चाहता। मेरा मतलब है, नया नियम यीशु के बारे में है, नया नियम बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन पुराना नियम बहुत महत्वपूर्ण था। और इसलिए उसने जो किया, वह यह था कि जब वह दीवार से टकराया, तो उसने कहा, ठीक है, वे ऐसा नहीं करने जा रहे हैं।

मुझे 40 पाउंड मिले क्योंकि याद रखें कि उसे वेतन और अन्य चीजें मिल रही थीं। और उसने जाहिर तौर पर 40 पाउंड बचाए थे, जो उसके लिए बहुत ज्यादा था क्योंकि उसके पास सब कुछ था। और इसलिए, उसने अपने पास मौजूद 40 पाउंड लिए, और यह 1685 की बात है।

क्या आप समझते हैं? वह पाँच साल में मर जाएगा। वह अब 81 साल का है। तो यह एक 81 वर्षीय व्यक्ति है।

वह अपने पास बचे हुए आखिरी 40 पाउंड ले लेता है। वे उसके लिए पुराने नियम की सामग्री नहीं छापेंगे। और फिर वह मूल रूप से समाज की पीठ पीछे, सुसमाचार के प्रचार के लिए समाज के पीछे, ऐसा नहीं करेगा।

और इसलिए वह 40 पाउंड लेता है, और वह जेम्स प्रिंटर और सैमुअल ग्रीन या जो भी वहाँ छपाई कर रहा है, उनसे ओल्ड टेस्टामेंट की छपाई शुरू करवाता है, यह महसूस करते हुए कि उसके 40 पाउंड ज्यादा काम नहीं आने वाले थे, लेकिन उसने उन्हें इसे सेट अप करने और अन्य काम शुरू करने के लिए कहा। खैर, समाज को पता चला कि वह इसे पूरा करने के लिए उनके पीछे-पीछे घूम रहा था। और इसलिए वे उससे थोड़ा नाराज़ हो गए।

और इसलिए इलियट ने मिस्टर बॉयल को पत्र लिखा। आपको याद होगा कि विसलो और बॉयल उनके दो समर्थक थे। बॉयल सुसमाचार के प्रचार-प्रसार के लिए सोसायटी के अध्यक्ष थे।

एडवर्ड विसलो ही वह व्यक्ति था जिसने भारतीयों के इकबालिया बयानों, पश्चाताप के आंसुओं से दस्तावेज लिए और उन्हें साफ धूप में इंग्लैंड ले आया और वहां इंग्लैंड में प्रकाशित किया। और इसलिए, श्री बॉयल ने मूल रूप से जॉन इलियट को पीछे से ऐसा करते हुए पकड़ लिया। और इसलिए, तब इलियट इस श्री बॉयल के बहुत आभारी हैं जिन्होंने उनकी इतनी मदद की।

तो, वह कहते हैं, यह जॉन इलियट बोल रहे हैं, वह कहते हैं, मेरी उम्र मुझे महत्वपूर्ण बनाती है। यह ऐसा था, यार, मैं 81 साल का हूँ। मुझे यह काम पूरा करना है।

मैं 81 साल का हूँ। मैं यह नहीं देखूँगा। मेरी उम्र मुझे जिद्दी बना देती है, और मैं खुशी-खुशी यहाँ से चला जाऊँगा।

मैं बाइबल को उनके बीच में ही छोड़ सकता हूँ, क्योंकि यह जीवन का वचन है। मैं देखना चाहता हूँ, मैं मरने से पहले इसे पूरा होते देखना चाहता हूँ। और मेरी उम्र इतनी ज़्यादा हो गई है कि मैं लंबे समय तक जीने की उम्मीद नहीं कर सकता।

और सुंड़ी कहते हैं कि अगर मैं जीवित रहते हुए पुनर्मुद्रित नहीं हो सकता, तो यह मानवीय तर्क की संभावना के दायरे में नहीं है, चाहे कभी भी, या कब, या कैसे भी हो। और वह कहते हैं, अरे, अगर मैं तस्वीर से बाहर हूँ, तो वह कहते हैं, मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ, यार। मेरा मतलब है, मैं देख सकता हूँ कि मेरी मृत्यु यहीं है।

वैसे, उसके सभी दोस्त पहले ही मर चुके थे, और जैसा कि मैंने कहा, उसने अपने छह बच्चों में से चार को खो दिया। उसके सिर्फ़ दो बच्चे ही उससे ज़्यादा जी पाए। और इसलिए उसने अपनी पत्नी की मृत्यु देखी और वास्तव में, इसके कुछ साल बाद ही, उसकी अपनी पत्नी भी मरने वाली है।

और इसलिए, उसे एहसास होता है कि वह अपनी अंतिम सीमा पर है। और वह बस कहता है, आमीन, मैं यह काम पूरा करके रहूँगा। अगर मैं यह काम पूरा नहीं कर पाया, तो यह काम नहीं हो पाएगा।

और इन भारतीयों को अपनी भाषा और चीज़ों में बाइबल की ज़रूरत है। इसलिए, हमें भी कहना चाहिए कि इलियट का विरोध हुआ। बहुत से लोगों, बसने वालों को संदेह था कि क्या भारतीय वास्तव में सुसमाचार को समझते हैं और क्या चल रहा था और क्या वे वास्तव में इसके प्रति वफादार थे या क्या वे सिर्फ़ अंग्रेजों को खुश करना चाहते थे और ऐसी ही चीज़ें।

ह्यूग पीटर नाम का एक आदमी, जो सलेम में एक पादरी है, उत्तरी तट पर है। आप बोस्टन क्षेत्र में आते हैं; आपको उत्तरी तट, बोस्टन और दक्षिणी तट मिलते हैं। और इसलिए, बोस्टन के बीच में उत्तरी तट, दक्षिणी तट का अंतर है और चार्ल्स नदी वहाँ से गुज़रती है।

और इसलिए, अगर आप बोस्टन क्षेत्र में गए हैं, तो आप जानते हैं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ: उत्तरी तट, केप एन, बोस्टन, और फिर दक्षिणी तट। इलियट दक्षिणी तट पर है, फिर। यह आदमी उत्तरी तट पर सलेम में है, ह्यूग पीटर, सलेम में एक पादरी।

उन्होंने पूरी मिशनरी योजना को एक धोखा बताकर और मिशनरी या भारतीय धर्मांतरण को महज एक धोखा बताकर बहुत नुकसान पहुंचाया। तो यहाँ सलेम में सुसमाचार का एक मंत्री है जो कहता है कि एलियट जो कर रहा है, वह सब झूठ है, यह सब एक धोखा है। और वे वास्तव में सच्चे ईसाई नहीं बन रहे हैं और इस तरह की बातें, जो विनाशकारी थीं।

उन्हें बसने वालों से विरोध का सामना करना पड़ा। बसने वालों ने ऐसा नहीं किया; फिलिप के युद्ध के बाद, बसने वालों को अब भारतीयों पर भरोसा नहीं रहा। और इसलिए उन्होंने उन पर भरोसा नहीं किया।

दूसरी तरफ़, उन्हें सैचैम्स और पॉववॉज़, पुजारियों और सरदारों से भी समस्याओं का सामना करना पड़ा। पुजारियों और सरदारों ने तब इलियट का भी विरोध किया क्योंकि अब उन्हें अंग्रेजों पर भरोसा नहीं था। वे ईसाई बन गए।

और मैं आपको बताऊंगा कि उनके साथ क्या हुआ, यहाँ तक कि ईसाई भारतीयों के साथ भी, उनके साथ क्या हुआ। और इसलिए, साचैम, प्रमुख और पुजारी, पाउवो अब अंग्रेजों पर भरोसा नहीं करते थे। इसलिए, इलियट को दोनों तरफ से समस्याओं का सामना करना पड़ा।

और इसलिए, यह उस समय का संदर्भ है। 1685 में, उन्होंने उनकी बाइबल का दूसरा संस्करण छापा। उसके बाद, उन्होंने तीसरा संस्करण पाने की कोशिश की, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। यह 1710 की बात है, मुझे लगता है, लेकिन इलियट बहुत पहले ही चले गए थे।

और कोई भी ऐसा नहीं था जो उसकी जगह ले सके। वह चाहता था कि कोई उसके पदचिन्हों पर चले, लेकिन कोई भी ऐसा नहीं कर सकता था। यह आदमी अपने आप में अनोखा था।

और इसलिए, यह 1710 के बाद था, जब उन्होंने मूल रूप से तर्क दिया कि अंग्रेजों को अंग्रेजी पढ़ने दी जाए। और इसलिए, यह कभी नहीं हुआ, तीसरा संस्करण। और इसलिए, इलियट का काम, यदि आप 1685 का संस्करण देखते हैं, तो वह एक दुर्लभ पुस्तक है, लेकिन यह 1663 जितना दुर्लभ नहीं है, क्योंकि उन्हें जला दिया गया था और उनमें से केवल एक हजार ही छपे थे और चीजें।

तो अब बात करते हैं किंग फिलिप के युद्ध की। तो यह थी एलियट की बाइबल। हमने इसे प्रकाशित और मुद्रित करवाने में आने वाली कुछ कठिनाइयों को दिखाया, और साथ ही अनुवाद संबंधी कुछ अंतरों, कठिनाइयों और सांस्कृतिक अंतरों को भी दिखाया जिनका एलियट को सामना करना पड़ा।

किंग फिलिप का युद्ध, 1675, 1676, उस तरह का ब्रेकेट, किंग फिलिप का युद्ध, उनके पास यह पेकॉट युद्ध था, पेकॉट युद्ध 1637 में हुआ था, लेकिन वह भारतीयों और बसने वालों के साथ एक छोटी सी झड़प थी। और यह वास्तव में बसने वालों द्वारा भारतीयों को स्टीरियोटाइप करने या भारतीयों द्वारा अंग्रेजों को स्टीरियोटाइप करने के बराबर नहीं था। और इसलिए यह उस तरह से चला गया, यह जल्दी और एक तरह से खत्म हो गया।

1770 के दशक में, जैसा कि हमने पहले कहा, 1674 में, इलियट और डैनियल गूकिन 14 ईसाई गांवों, प्रार्थना करने वाले भारतीय गांवों में गए और उनसे मुलाकात की। यह किंग फिलिप के युद्ध से एक साल पहले की बात है, ये प्रार्थना करने वाले भारतीय गांव हैं। इसे संदर्भ में रखने के लिए, विसलो इसका वर्णन इस तरह करते हैं।

किंग फिलिप के युद्ध में, प्रतिशत के हिसाब से, अमेरिका द्वारा सामना किए जाने वाले किसी भी युद्ध से ज़्यादा लोग मारे गए। और वह 1968 में लिख रही थी, मेरा मानना है कि ऐसा ही था। तो 1968 तक, किंग फिलिप के युद्ध में, प्रतिशत के हिसाब से ज़्यादा लोग मारे गए।

फिर से, वहाँ बहुत ज़्यादा लोग नहीं थे, और फिर भी, आप जानते हैं, बसने वालों की खोपड़ी उतारी जा रही थी, उन्हें मार दिया जा रहा था और उनकी इमारतों को जला दिया जा रहा था, उनके शहरों को जला दिया जा रहा था, जला दिया जा रहा था और इस तरह की चीज़ें की जा रही थीं। पूरे शहर जला दिए गए, और पूरे परिवार नष्ट हो गए। और यह क्रूर था।

मेरा मतलब है, भारतीय आते हैं, लोगों की हत्या करते हैं, और वे बहुत बुरे काम करते हैं। और इसलिए किंग फिलिप के युद्ध में, अंग्रेज हार रहे थे, और वे हार रहे थे, और उन्होंने अपनी आबादी का एक बड़ा हिस्सा खो दिया। और वे डर गए थे कि वे खत्म हो जाएंगे।

और भारतीय उन्हें, उनके पूरे समूह को और बाकी सब को मिटा देने वाले थे। और इसलिए, यह एक तरह का बहुत बड़ा खून-खराबा था जो चल रहा था। अंग्रेजों और भारतीयों ने इस घात लगाने की रणनीति का इस्तेमाल किया।

भारतीय जानते थे कि जंगल में कैसे लड़ना है, और वे जानते थे कि जंगल में कैसे छिपना है। और फिर वे, अचानक, उछल पड़े, और उन्होंने घात लगा दिया, और उन्होंने सैनिकों, अंग्रेजी सैनिकों और इन पहले बसने वालों और इस तरह की चीज़ों को मार डाला। उन पर घात लगाकर हमला किया गया।

और अंग्रेज वास्तव में 1675 में हार रहे थे। शुरू में, वे हारने लगे थे, और उन्हें डर था कि उनके सभी गाँव जला दिए जाएंगे और समुद्र में बहा दिए जाएंगे, ऐसा कहा जा सकता है। प्रार्थना करने वाले भारतीयों पर भरोसा नहीं किया गया, और निश्चित रूप से बसने वालों और इस तरह की चीज़ों पर भी नहीं।

इस सस्सामन व्यक्ति की हत्या हुई थी, और यह नैटिक में प्रार्थना करने वाले भारतीयों में से एक था। तो, याद रखें, नैटिक इस प्रार्थना करने वाले भारतीय गांव का केंद्र था। और मूल रूप से, सस्सामन व्यक्ति की हत्या कर दी गई थी।

मुझे लगता है कि यह एक जमे हुए तालाब में पाया गया था, और उसकी हत्या कर दी गई थी, और उन्होंने यह निर्धारित किया। फिर अंग्रेजों ने तीन भारतीयों को पकड़ लिया जिन्होंने उसे मार डाला था या कुछ और। उन्होंने उन भारतीयों को फांसी पर लटका दिया और उन भारतीयों को मार डाला।

और फिर राजा फिलिप ने इसे अपने युद्ध को भड़काने के लिए चिंगारी के रूप में इस्तेमाल किया। अंग्रेज हमारे लोगों को मार रहे हैं और इसका इस्तेमाल युद्ध को भड़काने के लिए कर रहे हैं। यह कभी-कभी आश्चर्यजनक होता है कि कैसे युद्ध किसी ऐसी चीज़ पर भड़क जाते हैं जो वास्तव में युद्ध के योग्य नहीं होती।

लेकिन फिर भी, उन्होंने इसका इस्तेमाल किया। और फिर भारतीयों को एक साथ रखा गया, और उन्हें बंदूकें नहीं दी गईं। वे खाद्यान्न की कमी से वंचित हो गए।

और फिर यह हुआ। बसने वालों को नहीं पता था कि वे इन ईसाई भारतीयों पर भरोसा कर सकते हैं, या जिन्हें वे प्रार्थना करने वाले भारतीय कहते हैं। इलियट के प्रार्थना करने वाले भारतीयों पर, क्या वे उन पर भरोसा कर सकते हैं? दूसरे शब्दों में, क्या आपने इन प्रार्थना करने वाले भारतीयों में से किसी पर भरोसा किया? और फिर आप वास्तव में संघर्ष में शामिल हो जाते हैं, और प्रार्थना करने वाले भारतीयों में से एक आपकी खोपड़ी लेने की कोशिश करता है।

और इसलिए उन्हें नहीं पता था कि वे उन पर भरोसा कर सकते हैं या नहीं। इसलिए, उन्होंने जो किया वह यह था कि उन्होंने नैटिक और इन जगहों, 14 गांवों में प्रार्थना करने वाले इन भारतीयों को इकट्ठा किया, और वे उन्हें चार्ल्स नदी के पास ले आए। मूल रूप से, चार्ल्स नदी पर नावें इंतज़ार कर रही थीं।

उन्होंने उन्हें नाव में बिठाया। फिर इलियट वहाँ आए; वे खुद वहाँ आए और अपने भारतीय मित्रों को अलविदा कहा। और वे उन्हें लेकर डियर द्वीप पहुँचे।

और मेरे पास कुछ वीडियो और कुछ तस्वीरें हैं जो मैंने आज डियर आइलैंड पर 360 डिग्री में लीं। आज, यह विन्थ्रोप के ठीक नीचे और वहाँ के तट पर जुड़ा हुआ है। लेकिन उन दिनों कोई कनेक्शन नहीं था।

यह बंदरगाह, बोस्टन हार्बर में था। अब, यह अटलांटिक महासागर है, बंदरगाह, और उन्हें सर्दियों के बीच में वहाँ रखा गया था। और अगर आप न्यू इंग्लैंड में सर्दियों के बारे में कुछ जानते हैं, तो वे वास्तव में बहुत कठोर हो सकते हैं।

और जाहिर है, जब उन्हें वहाँ भेजा गया था, तब सर्दी बहुत खराब थी। उन्होंने कहा कि बर्फ उनके कंधों तक थी। मेरे पास 20 फीट की दूरी है, जहाँ मुझे अपने फुटपाथ से सड़क तक बर्फ खोदनी पड़ी।

और यह ऊपर तक था, और मेरे पास दोनों तरफ छह और सात फीट ऊंचे बर्फ के ढेर थे। मैं अब मेरी तरह बूढ़े होने पर बर्फ खोदने की सलाह नहीं देता, लेकिन तब आपको बर्फ हटाने वाली मशीन मिल जाती है। लेकिन इन लोगों के पास वह नहीं था।

और इसलिए, उन्हें वहाँ रखा गया है। वहाँ कोई भोजन नहीं है, कोई आश्रय नहीं है। और इन भारतीयों को अटलांटिक में इस बंदरगाह के बीच में डियर द्वीप पर रखा गया है।

और मूल रूप से, उनमें से कई मर गए। और इसलिए, यह वास्तव में बहुत ही कठिन बात है। वहाँ एक स्मारक है, और मैं इसे आपको इन तस्वीरों में दिखाऊँगा।

अब डियर आइलैंड पर एक स्मारक है जो किंग फिलिप के युद्ध के दौरान इन ईसाई, प्रार्थना करने वाले भारतीयों के साथ जो हुआ उसकी याद दिलाता है। यह विनाशकारी था। यह विनाशकारी था।

यहाँ डियर आइलैंड की कुछ तस्वीरें हैं। और जैसा कि आप देख सकते हैं, यह लोगान एयरपोर्ट के ठीक सामने, विन्थ्रोप के दक्षिण में है। अब वहाँ एक कनेक्टिंग इस्थमस जैसी चीज़ चल रही है।

उस समय यह एक द्वीप था। भारतीयों को वहाँ भेजा गया था, और उनमें से कई 1675 और 1676 की भयानक सर्दी से बच नहीं पाए। यहाँ हिरण द्वीप पर पहाड़ी की चोटी पर एक त्वरित पैनोरमा है।

और वहाँ कुछ चीज़ें हुईं। जैसा कि हमने कहा, वहाँ कोई आश्रय नहीं था। सैकड़ों भारतीयों को वहाँ रखा गया।

उनमें से बहुत से, बहुत से, बहुत से लोग मर गए। एक बात जो इस तरह की थी... इलियट को पता था कि ये लोग डियर आइलैंड पर थे। और डियर आइलैंड यहाँ ऊपर है।

रॉक्सबरी यहाँ नीचे है। इसे लाने के लिए काफी लंबा रास्ता तय करना पड़ता है, ठीक है, बंदरगाह के पार, चार्ल्स नदी, जहाँ से यह निकलती है। इलियट फिर डैनियल गूकिन के साथ एक छोटी नाव में सवार हो गए, और वे मूल रूप से हिरण द्वीप पर इन भारतीयों के लिए कुछ खाद्य पदार्थ ले जा रहे थे।

तो, वे इस छोटी नाव में हैं, और वे उस पार जा रहे हैं। यह एक अच्छा रास्ता है। मेरा मतलब है, मुझे नहीं पता, कुछ मील, कुछ ऐसा ही, एक खुले बंदरगाह के पार।

मेरा मतलब है, यह एक अच्छा तरीका है। बसने वालों द्वारा चलाए जा रहे बड़े जहाजों में से एक आया और उसने गूकिन और इलियट को देखा, और उन्होंने अपनी नाव को टक्कर मार दी और मूल रूप से उसे डुबो दिया और उसे टक्कर मार दी। और इलियट को पानी में फेंक दिया गया।

अब आपको याद होगा कि यह आदमी लंगड़ा है। वह चल नहीं सकता। उसका एक पैर नहीं है।

अगर आप कभी बोस्टन से अटलांटिक महासागर में गए हैं, और खास तौर पर पतझड़ और सर्दियों में, तो आपको पता चलेगा कि यह ठंडा है। मेरा मतलब है, यह ऐसा नहीं है कि चलो तैरते हैं। यह ठंडा है।

आप हाइपोथर्मिया से मर सकते हैं। इसलिए, उन्होंने नाव को फेंक दिया, उन्होंने नाव को मारा। उन्होंने कहा, ओह, यह बस एक दुर्घटना थी।

यह बिलकुल सही था। अगर आपको बंदरगाह दिखाई दे तो समझ लीजिए कि उन्होंने नाव को टक्कर मारी है। ऐसा जानबूझकर किया गया था।

ज़्यादातर लोग मानते हैं, और अगर आप परिस्थितियों को देखें, तो मुझे लगता है कि आप यह दस्तावेज़ बना सकते हैं कि उन्होंने उन पर हमला किया, और उन्होंने इस बड़ी नाव से टक्कर मारी, इस छोटी नाव से टक्कर मारी। इलियट को समुद्र में फेंक दिया गया, और उन्हें उसे वहाँ से घसीट कर निकालना पड़ा, नहीं तो वह मर सकता था और इसी तरह की अन्य घटनाएँ। और इसलिए, बसने वालों ने यही किया।

दूसरे शब्दों में, वह नहीं चाहता था कि इलियट डीयर आइलैंड पर भारतीयों की मदद के लिए खाद्य सामग्री ले जाए, लेकिन इलियट ने इन भारतीयों और अन्य लोगों की मदद करने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी क्योंकि वे उसके दोस्त थे। वह उन पर विश्वास करता था, और वे ईसाई थे, ईसाई भाई। और इसलिए, ये कुछ चीज़ें थीं।

लेकिन हुआ यह कि यह 1665 का साल था और भारतीय जीत रहे थे। बसने वाले हार रहे थे और यह लगभग खत्म होने वाला था। फिर जो हुआ वह यह था कि बसने वालों ने फैसला किया कि वे कुछ भारतीयों पर भरोसा कर सकते हैं।

और इसलिए कुछ भारतीयों को वापस लाया गया और उन्हें स्काउट के रूप में इस्तेमाल किया गया। और वे मूल रूप से भारतीयों पर उल्टा घात लगाना शुरू कर देते थे। उन्होंने इन स्काउट्स का इस्तेमाल यह पता लगाने के लिए भी किया कि भारतीय पहले कहाँ थे ताकि वे पकड़े न जाएँ।

एक बार जब उन्होंने भारतीयों का इस्तेमाल करना शुरू किया और उन्हें स्काउट और विभिन्न कार्यों के लिए इस्तेमाल करना शुरू किया, तो मुझे नहीं पता कि आप इसे सैन्य रूप से क्या कहेंगे, लेकिन मूल रूप से, युद्ध ने पलटना शुरू कर दिया और अंत में राजा फिलिप को मार दिया गया। और एक बार जब वह मारा गया, तो युद्ध खत्म हो गया। उन्हें उनके नेतृत्व की आवश्यकता थी।

और ईमानदारी से कहूँ तो वह कोई बहुत बड़ा नेता नहीं था, लेकिन वह इन सभी भारतीयों को भड़काने में सक्षम था कि वे बाहर जाकर बसने वालों को मार डालें। इलियट को देखा गया, और राजा फिलिप के युद्ध के साथ इलियट के बारे में लोगों का नज़रिया बदल गया। पहले, वह एक महान नायक था जो भारतीयों को धर्म प्रचार करने की कोशिश कर रहा था, और वह बाइबल का अनुवाद कर रहा था।

उसने जो किया वह अविश्वसनीय था। अब उसे उन भारतीयों की मदद करने वाला माना जाता है जो हमें मार रहे हैं। इसलिए, उसे देशद्रोही माना जाता है।

और आपको यह बात समझ में आ गई होगी कि भारतीयों का पक्ष लेने की वजह से उनकी बहुत आलोचना हुई। और मेरे अपने बेटे को भी इसका सामना करना पड़ा जब वह अफ़ग़ानिस्तान में था, जब उसने अफ़ग़ान लोगों के लिए कुछ किया और उनकी रक्षा की, और उसके अपने कुछ मरीन ने उसे हाजी प्रेमी कहा, जो कि सबसे नीचतम स्तर था। आप इससे नीचे नहीं जा सकते।

और फिर मेरे बेटे के लिए गंभीर परिणाम हुए क्योंकि वह एक कोट हाजी प्रेमी था। और वह बस यही कहने की कोशिश कर रहा था कि हमें इन लोगों की मदद करनी चाहिए न कि उन्हें मजबूर करना चाहिए और यह दिखाना चाहिए कि हम कितने बड़े और मजबूत हैं और ऐसी ही अन्य बातें। वैसे भी, इलियट उसी स्थिति में था जहाँ वह भारतीयों और बसने वालों की मदद कर रहा था, लेकिन वे इलियट को पसंद नहीं करते थे।

उन्होंने उसे एक तरह से विश्वासघाती के रूप में देखा, जो उन लोगों की मदद कर रहा था जो उन्हें मार रहे थे और इसी तरह की अन्य चीजें। इसलिए, इलियट ने भी, जब उन्होंने इन भारतीयों को पकड़ा, तो कभी-कभी वे उन्हें मार देते थे, बसने वालों ने उन्हें मार डाला, उन्होंने भारतीयों को पकड़ लिया, वे उन्हें वेस्ट इंडिया, वेस्ट इंडीज में बेच देते थे। और फिर वे इन भारतीयों को गुलामों के रूप में बेच देते थे, मूल रूप से वेस्ट इंडीज में।

तब इलियट ने वास्तव में इस पर आपत्ति जताई। और उसने कहा, नहीं, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, यार। और इसलिए, वैसे भी, उसने युद्ध के बाद और युद्ध की प्रक्रिया में भारतीयों की इस गुलामी पर आपत्ति जताई।

तो, यहाँ की पूरी संस्कृति में बदलाव आया है। 14 भारतीय गाँवों में से 10 गाँव खंडहर में तब्दील हो गए और उन्हें जलाकर राख कर दिया गया और बस खंडहर में ही छोड़ दिया गया, आग लग गई और चोरी हो गई, और हर तरह की घटनाएँ हुई। और इस तरह, 14 में से 10 गायब हो गए।

नैटिक बहुत बड़ा था। याद रखें नैटिक बहुत बड़ा था। हमने आपको नक्शे पर बोस्टन के दक्षिण की चीजें दिखाई, और नैटिक उन कुछ जगहों में से एक था जिसे फिर से बनाया गया था। और इलियट तब, यह दिलचस्प था, वह अभी भी नैटिक में उपदेश देता था। और इसलिए वह रॉक्सबरी और नैटिक के बीच जाता था जैसा कि उसने किया था।

आखिरकार उन्हें 1683 में यह आदमी मिला, डैनियल ताकावम्बेट। और अब इलियट, इलियट क्या, इस समय उसकी उम्र लगभग 82, 83 होगी। अब यह वास्तव में 79 या उसके आसपास होगा, मैं भूल गया, आपको इसे जोड़ना होगा।

लेकिन वैसे भी, वह 70 के दशक के अंत या 80 के दशक की शुरुआत में है। और यह आदमी, डैनियल, मूल रूप से एक भारतीय है जो अब नैटिक चर्च का पादरी बन गया है। और जब मैं नैटिक चर्च के अंदर था, तो उनके पास अपने सभी पादरियों की एक सूची थी।

और आप देख सकते हैं कि वह उनके पहले भारतीय पादरी थे। इलियट ने मूल रूप से उन्हें नियुक्त करने का काम किया, उन्हें नियुक्त किया और उनके निधन से पहले उस चर्च में शामिल किया। और इसलिए यह एक बड़ी बात थी।

समस्या यह थी कि डैनियल ताकावम्बैट की मृत्यु के बाद, मूल रूप से, वह अंतिम व्यक्ति था; फिर अंग्रेजों ने उस चर्च पर कब्जा कर लिया। और इसलिए उसके बाद, वहाँ केवल अंग्रेज लोग ही थे। और मुझे लगता है, जब वह मर गया, लेकिन वैसे भी, उसके बाद, नैटिक में भी चर्च पर अंग्रेजों ने ही कब्जा कर लिया।

इसलिए, कुछ ट्यूक्सबरी भारतीय जंगल में भाग गए, और उन्होंने उसे वापस लाने की कोशिश की। ठीक है। इस युद्ध की प्रक्रिया के बाद भारतीय जंगल में भाग गए।

और भारतीयों ने इस तरह जवाब दिया: उद्धरण, हम जो कुछ भी पीछे छोड़ गए हैं उसके लिए हमें खेद नहीं है, लेकिन हमें खेद है कि अंग्रेजों ने हमें भगवान से प्रार्थना करने से दूर कर दिया है। और हमारे नेता से, हमने भगवान से प्रार्थना करने के बारे में थोड़ा समझना शुरू किया। ये प्रार्थना करने वाले भारतीय हैं, ट्यूक्सबरी।

वे जंगल में भाग गए क्योंकि उन्हें डर था कि वे इस युद्ध में मारे जाएंगे। और उन्होंने कहा, हम वापस नहीं आएंगे, यार। और हम जो कुछ भी पीछे छोड़ आए हैं, उसके लिए हमें खेद है, हमारा सामान और सामान।

हमें इसका अफसोस नहीं है, लेकिन हमें इसे छोड़ने का अफसोस है। हम अभी भगवान से प्रार्थना करना और इस तरह की चीजें सीखना शुरू ही कर रहे थे। और हमें इसका वाकई अफसोस है।

हालाँकि, भारतीयों को ईसाई बनाने के प्रयास उस रुचि और उत्साह के साथ फिर से शुरू नहीं हुए जो पहले महसूस किए गए थे। तो, यह राजा फिलिप का युद्ध है, 1675; इलियट के सभी प्रयास और चीजें, जो शहर वहाँ थे, भारतीय प्रार्थना करने वाले शहर। मूल रूप से, नैटिक को छोड़कर सभी ढह गए। उन्हें पुनर्निर्माण करना पड़ा।

इलियट अब 72 साल के हो चुके हैं। उनकी ताकत कम होती जा रही है। वे कभी भी साइटिका और पैर में लंगड़ापन से उबर नहीं पाए।

वह रॉबर्ट बॉयल को पत्र लिखता है, जो इंग्लैंड में वापस आ गया है और सोसाइटी फॉर द प्रोपेगेशन ऑफ द गॉस्पेल का प्रमुख है। वह कहता है कि मैं लंगड़ा और काफी विकलांग हूँ। और इसलिए, वह इधर-उधर यात्रा कर रहा है।

मुझे नहीं पता कि उन्होंने यह कैसे किया। और युद्ध के परिणामस्वरूप अधिकांश भारतीय बाइबलों के नुकसान का सामना करना उनके लिए विनाशकारी था। रॉबर्ट बॉयल को फिर से लिखे एक पत्र में, उन्होंने नुकसान पर शोक व्यक्त किया और एक और संस्करण छपवाने का अनुरोध किया।

मेरी उम्र मुझे जिद्दी बना देती है। उसने कहा, मैं खुशी-खुशी विदा हो जाऊंगा। मैं उनके बीच बाइबल छोड़ सकता हूँ, क्योंकि यह जीवन का वचन है।

उनमें से कुछ ईश्वरीय आत्माएँ हो सकती हैं जो इसी तरह से जीवन यापन करती हैं, और उन्हें अपनी भाषा में बाइबल की ज़रूरत है। इसलिए वह रॉबर्ट बॉयल लिखते हैं। हमने उनमें से कुछ चालों के बारे में बात की।

यहां तक कि रिचर्ड बैक्सटर, जो उनके महान आध्यात्मिक समर्थक थे, इंग्लैंड में थे, महान प्यूरिटन रिचर्ड बैक्सटर ने इलियट को एक के बाद एक पत्र लिखे थे। लेकिन बाइबलों को जलाने और अन्य घटनाओं के बाद, रिचर्ड बैक्सटर ने भी कहा, चलो बाइबलों जैसी कोई और घटना न करें। और इसलिए, हमने इस बारे में बात की कि इलियट ने किस तरह से इस तरह की चालाकी की और इसे अंजाम दिया।

यह सही है। 1610 में, 1685 के बाद, उन्होंने तीसरा संस्करण बनाने की कोशिश की, लेकिन यह चल नहीं पाया। लोगों ने इसे और अन्य चीजों को नहीं खरीदा।

मैं अब जॉन इलियट के अंतिम दिनों के बारे में बात करना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि आप समझ सकते हैं कि मेरे मन में इस व्यक्ति के लिए बहुत सम्मान है। मेरे जीवन में ऐसा बहुत कम हुआ है कि मैंने जॉन इलियट और भारतीयों की कहानियों और उनके मसीह के प्रति स्वीकारोक्ति और उनके अपने पापों के प्रति स्वीकारोक्ति और इस तरह की अन्य बातों जैसी कोई कहानी पढ़ी हो।

इस तरह का पश्चाताप और स्वीकारोक्ति, मैंने अपने जीवनकाल में शायद ही कभी देखा हो। और मैंने कभी नहीं देखा, मैंने कभी नहीं देखा, यह आदमी एक अद्भुत आदमी है। अपने 80वें जन्मदिन पर, नेहेमिया वाल्टर, याद है मैंने आपको कैसे बताया था कि उन्हें ये पुराने नियम के नाम पसंद हैं। नेहेमिया वाल्टर, रॉक्सबरी में इलियट के 80वें जन्मदिन पर, एक और पादरी आया जो रॉक्सबरी में आया।

वह 80 साल के हैं। अंत में, एक और मंत्री आता है। तब इलियट अपना वेतन छोड़ देता है।

उन्होंने चर्च से कहा, अरे यार, तुम्हारे पास मुझे और अन्य चीजों को देने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं हैं। मैं अपना वेतन छोड़ देता हूँ, नेहेमिया वाल्टर को इसे लेने देता हूँ, और इस तरह की बातें करता हूँ। लेकिन लोग इतने, तो, मैं कैसे कहूँ, उन्होंने 1632 से इन लोगों की सेवा की थी।

और अब यह वही है जो 1680 के दशक में हुआ था और 60 साल या उससे भी ज़्यादा समय तक। और उन पर इतना ज़्यादा बकाया था कि उन्होंने कहा, नहीं, नहीं, नहीं, हम आपको पैसे देते रहेंगे। और, आप जानते हैं, आपको अपना घर और अपनी चीज़ें मिल जाती हैं।

और वह 80 साल के हो चुके हैं, और बूढ़े हो रहे हैं। उनकी पत्नी की मृत्यु 1867 में हुई, माफ़ करें, 1687 में। 1687 में इलियट की मृत्यु से तीन साल पहले की बात है।

उनकी पत्नी हन्नाह की मृत्यु हो गई। यह बहुत ही दुखद था। केवल उनका बेटा जोसेफ और उनकी सबसे बड़ी बेटी हन्नाह ही जीवित बचे।

उसने अपने सभी अन्य बच्चों को खो दिया, उससे पहले चार अन्य बच्चे भी। और अब हन्नाह की मृत्यु हो गई, जो उसके लिए बहुत दुखद है। वे एक बहुत ही बढ़िया जोड़ी थे।

इलियट में हास्य की भावना थी; यह बात उन्हें स्वीकार करनी होगी। इसलिए अब उनकी उम्र बहुत हो गई है। और ये सभी पहली पीढ़ी के बसने वाले, याद कीजिए कि हमने पहली पीढ़ी के बसने वालों के बारे में कैसे बात की थी, रिचर्ड माथेर, थॉमस हुकर जैसे लोग, जो हार्टफोर्ड के संस्थापक और फिर कनेक्टिकट के गवर्नर थे और उनके गुरु भी थे।

जॉन कॉटन, बोस्टन के पहले चर्च में प्रसिद्ध प्रारंभिक उपदेशक, 67 वर्ष की आयु में मर गए। जॉन विल्सन, जिन्हें उन्होंने बोस्टन के पहले चर्च में स्थानापन्न किया था, उनका भी निधन, आप जानते हैं, 20, 30 साल पहले हुआ था। माथेर की मृत्यु हुई, हुकर की मृत्यु हुई, कॉटन की मृत्यु हुई।

तो, ये सभी पहली पीढ़ी के हैं, और एलियट 87 वर्ष तक जीवित रहे। उनकी मृत्यु 1690 में हुई, 1604 से 1690 तक। तो, वे उनमें से कई लोगों से 20 साल अधिक जीवित रहे।

वह उनसे ज़्यादा समय तक जीवित रहता है। और इसलिए, हास्य की भावना के साथ, वह अपने पुराने परिचितों से कहता है, यह रिचर्ड मैथर्स और जॉन कॉटन्स हैं, और वे लोग, उनके पुराने परिचित, उनसे बहुत पहले स्वर्ग चले गए थे कि उन्हें डर था कि वे सोचेंगे कि वह गलत रास्ते पर चला गया है क्योंकि वह बहुत लंबे समय तक पीछे रह गया था। और इसलिए जैसा कि वह कहता है, मेरे सभी दोस्त, मैथर्स और कॉटन्स और जॉन विल्सन और थॉमस शेफर्ड, वे सभी मर गए।

और यह इतना लंबा था कि वे शायद स्वर्ग में यह सोचने की कोशिश कर रहे थे कि, यार, जॉन इलियट कहाँ गया? और शायद वे सोचते होंगे, यार, वह गलत जगह चला गया होगा क्योंकि हम सब यहाँ हैं, और वह चला गया। और इसलिए आप उसके साथ उसके हास्य की भावना को देख सकते हैं, लेकिन यह भी दर्शाता है कि वह पहले बसने वालों की पीढ़ी से आगे रहता था, बसने वालों की दूसरी पीढ़ी में, लेकिन उसके पास यह है। और इसलिए यह मेरे लिए अच्छा है, अमेरिका की इस सारी आलोचना के साथ जो अब हमारे पास है, इन पहले बसने वालों में से कुछ को देखने और मसीह के लिए उनके जुनून, मदद करने और इस तरह की चीज़ों के लिए उनके जुनून को देखने के लिए, भारतीयों और इस तरह की चीज़ें।

और ये कहानियाँ क्यों नहीं बताई जाती? और इसलिए मैं यहाँ YouTube पर इस कहानी और चीज़ों को बताने का काम कर रहा हूँ। मान लीजिए, यह एक अद्भुत व्यक्ति है। आप आज इधर-उधर नहीं देखते, आप इधर-उधर देखते हैं, और आप कहते हैं, ठीक है, हम सबसे महान हैं। नहीं, नहीं, नहीं।

आप जॉन इलियट जैसे लोगों और उनके द्वारा किए गए कामों की सराहना नहीं कर सकते। यह वाकई एक अद्भुत, अद्भुत व्यक्ति था। सच में, भगवान ने उन पर बहुत शक्तिशाली तरीके से अपना हाथ रखा था।

उम्र बढ़ने पर उनका अपना चिंतन। अब, जॉन इलियट बूढ़े हो रहे हैं और वे उम्र बढ़ने पर चिंतन करते हैं। जैसे-जैसे मैं बूढ़ा हो रहा हूँ, मैं चिंतन करता हूँ।

और इसलिए, मैं उनकी टिप्पणियों की सराहना करता हूँ। फिर से, यहाँ थोड़ा हास्यबोध है। जॉन इलियट कहते हैं, मेरी समझ मुझे छोड़ देती है।

मैं वहाँ गया था। मेरी याददाश्त मुझे धोखा देती है। मैं वहाँ गया था। मेरी वाणी मुझे धोखा देती है। लेकिन मैं भगवान का शुक्रिया अदा करता हूँ कि मेरी दानशीलता अभी भी कायम है। दूसरे शब्दों में, मैं चीजों को याद नहीं रख सकता।

मैं अब पहले की तरह बातें शब्दों में नहीं कह सकता। मेरी याददाश्त कमज़ोर हो गई है। मेरी समझ कमज़ोर हो गई है।

लेकिन मेरी दानशीलता, उसकी दयालुता, अभी भी मजबूत है, और मुझे उसे यह देना ही है। यह आदमी एक तरह से अद्भुत चीज है। वह मर जाता है।

और जब वह अस्सी की उम्र में बूढ़ा हो रहा था, जब उसने अपना पादरी का काम छोड़ दिया, तो आप एलियट के घर आए, अंदाज़ा लगाइए कि आपने क्या देखा? जॉन एलियट, यह 87 वर्षीय व्यक्ति, 86 वर्षीय व्यक्ति छोटे बच्चों, अश्वेत बच्चों, भारतीय बच्चों और श्वेत बच्चों की सेवा करता था और उन्हें उपदेश देता था, उन्हें पढ़ना और लिखना और इस तरह की चीज़ें सिखाता था। और यही उसने अपने जीवन के अंत में किया। इसलिए भारतीय अश्वेत बच्चे उसकी कुर्सी के चारों ओर इकट्ठा होते थे और वह उन्हें पढ़ना और लिखना सिखाता था।

और इस तरह उन्होंने अपने जीवन का अंतिम समय बिताया। अद्भुत व्यक्ति, 86 वर्ष के। 86 वर्ष की उम्र में, वास्तव में, 1690 में, जब वे गुजरे, तो उनके अंतिम शब्द थे, स्वागत है खुशी।

और वह घटनास्थल से चला जाता है। सैमुअल सेवेल, वास्तव में चुड़ैलों के मामलों के न्यायाधीश, और हम उसके बारे में बाद में और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन वह जॉन जॉन एलियट के दफ़न, मृत्यु और दफ़न के बारे में बताता है। रॉक्सबरी में कब्र पर आज भी, आज तक, यह लिखा है, यहाँ जॉन एलियट के अवशेष हैं, जो भारतीयों के लिए प्रेरित थे, जिन्हें 5 नवंबर, 1632 को रॉक्सबरी के पहले चर्च में नियुक्त किया गया था, 20 मई, 1690 को 86 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई।

नैटिक गांव का चर्च डैनियल ताकावम्बैट के अधीन 26 साल तक चला। और फिर 1716 में, डैनियल की मृत्यु हो गई और फिर 1716 से अंग्रेजों ने इसे अपने अधीन कर लिया। मैं जॉन इलियट को श्रद्धांजलि की एक श्रृंखला पढ़ना चाहता हूँ।

और ये श्रद्धांजलियाँ अद्भुत हैं। यह उनके अपने नज़रिए पर उनकी अपनी टिप्पणी है। उन्होंने खुद को वैसा ही देखा जैसा मैं हूँ, लेकिन जंगल में एक झाड़ी।

गाइ ने इन अविश्वसनीय कामों को करने के बाद विनम्रता दिखाई जो एक व्यक्ति कर सकता है। वह देखता है, मैं जंगल में एक झाड़ी को देखता हूँ। उसने रॉबर्ट बॉयल को लिखा, मेरे काम, और यह इलियट रॉबर्ट बॉयल से बात कर रहा है, मेरे काम, अफसोस, वे खराब और छोटे और कमज़ोर काम रहे हैं।

और मैं ही वह व्यक्ति होऊंगा जो उन सभी पर पहला पत्थर फेंकेगा। दूसरे शब्दों में, इलियट कहते हैं, मैंने जो किया वह वास्तव में बहुत छोटा था, और बहुत कुछ। और वह कहते हैं, मैं अपने काम पर पत्थर फेंकने वाला पहला व्यक्ति होऊंगा।

और वे छोटे, दुबले-पतले और गरीब हैं। और आप बस यही कहेंगे कि यह आदमी वाकई विनम्र है और उसने वाकई कमाल के काम किए हैं। और फिर भी, जब उसने ऐसा किया, तो उसने अपना सिर नहीं फुलाया।

मैं महान जॉन इलियट मिशनरी हूँ, या, आप जानते हैं, भारतीयों के लिए प्रेरित हूँ। नहीं, नहीं, कभी भी उनके सिर पर नहीं चढ़ा। आप जानते हैं, वह वास्तव में अपनी विनम्रता और अपनी दयालुता को बनाए रखने में सक्षम थे, और उनकी दानशीलता ने उन्हें कभी नहीं छोड़ा।

उन्होंने अपने पीछे इस बात का सबूत छोड़ा कि एक व्यक्ति का समर्पण क्या मायने रखता है। रॉक्सबरी और नैटिक दोनों जगहों पर अपने दोस्तों, भारतीयों और अन्य लोगों के प्रति उनकी दृढ़ता और समर्पण। विसलो लिखते हैं कि वे एक बुद्धिजीवी नहीं थे।

वह बहुत ही प्रतिभाशाली व्यक्ति थे और उन्होंने कई तरीकों से यह काम किया, लेकिन वह बौद्धिक नहीं थे। वह कोई राजनेता नहीं थे। उन्होंने किसी भी दिशा में देश की कला को समृद्ध नहीं किया।

वह एक बहुत ही सरल व्यक्ति थे, बाइबल को ईश्वर के वचन के रूप में स्वीकार करने में सरल, इस बात में सरल कि ईश्वर प्रयासों में सफल होते हैं, उन लोगों के प्रयासों में जो यह विश्वास करते हैं कि ईश्वर उन्हें सफल करेंगे। उनकी यह धारणा सरल थी कि सभी मनुष्य, यहाँ तक कि जो पतित हैं, वे भी ईश्वर की संतान हैं। यह सरलता, इसी सरलता में उनकी ताकत निहित थी।

यह अमेरिकी उपनिवेशवादियों और बसने वालों और अन्य चीजों की पहली पीढ़ी है। उनके जीवन के काम का प्रतिनिधित्व किया गया है। और मैं दक्षिण बोस्टन गया।

मैं साउथ बोस्टन का निवासी नहीं हूँ, लेकिन मैं वहाँ गया और इन चीज़ों का अध्ययन करना शुरू किया। और वहाँ कई तरह की सड़कें हैं जिनका नाम एलियट स्ट्रीट है, एक एल और एक टी के साथ उसी तरह लिखा जाता है, एलियट स्ट्रीट। न्यूटन में ऐसी ही सड़कें हैं, जमैका प्लेन्स।

इलियट के नाम पर कई तरह के चर्च हैं। मैंने आपको नैटिक में मौजूद चर्च की तस्वीरें दिखाई हैं। मैंने हाल ही में लोवेल में इलियट चर्च की तस्वीरें लीं, जहाँ मेरी पत्नी नॉर्थ शोर पर काम करती है।

स्कूलों का नाम उनके नाम पर रखा गया है। उन्होंने रॉक्सबरी लैटिन स्कूल में स्कूल शुरू किया, जो देश का सबसे पुराना स्कूल है। और जमैका प्लेन्स में भी, पहला एकीकृत स्कूल, जहाँ अश्वेत, भारतीय और गोरे सभी थे।

आज भी जमैका प्लेन्स, इलियट स्कूल, अस्तित्व में है। और मुझे लगता है कि मैंने आपको इसकी कुछ तस्वीरें दिखाई थीं। उनके काम की याद में लगाए गए चिह्न।

और आप दक्षिणी बर्लिंगटन क्षेत्र, नैटिक क्षेत्र, न्यूटन क्षेत्र में जाते हैं, और आप जॉन इलियट के काम की याद में ये संकेत देखते हैं, मूल रूप से 1640 के दशक में, और वह सामान आज भी मौजूद है। स्टेट हाउस बिल्डिंग के ठीक बगल में, बीकन स्ट्रीट पर कांग्रेसेशनल लाइब्रेरी और आर्काइव के सामने पत्थर पर नक्काशी की गई है। फिर, नैटिक पोस्ट ऑफिस में भित्ति चित्र बनाए गए।

अगर आप कभी वहां जाएं तो यह एक दिलचस्प भित्तिचित्र है। वैसे भी, जॉन एलियट का भारतीयों से बात करते हुए एक भित्तिचित्र है, और बोस्टन कॉमन्स के पास स्टेट हाउस, विशाल स्वर्ण गुंबद स्टेट हाउस में भी भित्तिचित्र है। आप वहां जाते हैं, और आप हॉल ऑफ फ्लैग्स में जाते हैं, और आप ऊपर देखते हैं, तो आपको जॉन एलियट का भारतीयों से बात करते हुए एक विशाल भित्तिचित्र आज भी मौजूद है।

और समापन श्रद्धांजलि, ठीक है, समापन श्रद्धांजलि। और यह गॉर्डन कॉलेज के लिए किया गया था। उनके पास इलियट की 1663 बाइबिल की एक प्रदर्शनी थी, और उनके पास एक प्रदर्शनी थी।

डॉ. डेमन डिमाउरो और सारा सेंट जर्मेन ने इसे स्थापित किया। यह अद्भुत था। और उनके पास वहाँ बाइबल भी थी।

उन्होंने अभी-अभी इसे रीबाउंड करवाया था। और मुझे इसे पढ़ने दो। जब हम उस पुरानी काली किताब को अपने हाथों में लेते हैं, तो हम समझते हैं कि इसमें लिखे शब्दों का एक और सुंदर अर्थ है, जिसे हम समझते हैं।

यह स्नेह का प्रतीक है, जिसे एक समर्पित व्यक्ति अपने साथी मनुष्य की आत्मा के लिए संजोता है। यह परोपकार की अभिव्यक्ति है, जो अंधेरे में बैठे लोगों को रोशनी देने के किसी भी प्रयास में बेहोश नहीं हुई। एलियट के बारे में यह कितना सुंदर कथन है।

और यद्यपि हम उस पुस्तक के शब्दों को नहीं समझ पाते, लेकिन यह उनके प्रेम और उनकी दृढ़ता को दर्शाता है। यह शायद बिना किसी अतिशयोक्ति के कहा गया है कि श्री एलियट सबसे सफल मिशनरी थे जिन्होंने भारतीयों को सुसमाचार का प्रचार किया। मैं अब फ्रांसिस, कॉनवर्स फ्रांसिस नामक एक व्यक्ति की श्रद्धांजलि पढ़ना चाहता हूँ।

अपनी पुस्तक के अंत में, वे कहते हैं, हम नैतिक साहस, आत्म-बलिदान की भावना की प्रशंसा करते हैं, जिसने उपदेश, यात्रा और निर्देश के कार्यों में एलियट का तिरस्कार किया, कभी भी विचलित नहीं हुआ, कभी भी भयंकर धमकियों से नहीं डरा, कभी भी तूफानों और ठंड और विभिन्न प्रकार की शारीरिक पीड़ाओं के संपर्क में नहीं आया। लेकिन जब हम उनका प्रतिनिधित्व करते हैं, जब हम उन्हें अपने दिमाग में अपने अध्ययन के मौन में शास्त्रों के अनुवाद पर मेहनत करते हुए दर्शाते हैं, साल दर साल सुबह के घंटे की ताजगी में और आधी रात के समय, थके हुए, लेकिन निराश नहीं, बोली की लगभग अकल्पनीय वाक्यांशवली से लगातार उलझन में, और फिर भी हमेशा यह पता लगाने के लिए धैर्य रखें कि पवित्र पुस्तकों के अर्थ को सही ढंग से कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है, यह अध्याय दर अध्याय, पद दर पद, बिना किसी मेहनत के। एलियट का नाम उल्टा लिखने पर क्या होगा? मेहनत।

टॉडल ई. लंबे समय से प्रकाशन की केवल एक धुंधली सी आशा को संजोए हुए, फिर भी यह विश्वास करने को तैयार कि ईश्वर, अपनी अच्छी नियति में, अंततः उन लोगों को जीवन का मुद्रित शब्द देने का साधन भेजेगा जिनके लिए उसने परिश्रम किया और प्रार्थना की। हम यह महसूस किए बिना नहीं रह सकते कि हम मूल निवासियों के बीच अपने मंत्रालय के उत्साहपूर्ण और सक्रिय कर्तव्यों से मौजूद किसी भी अन्य की तुलना में अधिक कठिन कार्य, अधिक आश्चर्यजनक श्रम देख रहे हैं। और फिर यहाँ एक और साथी जॉन इलियट के लिए अपनी तरह की प्रशंसा का हवाला दे रहा है।

जॉन इलियट से भी अधिक महान, सच्चा, गर्मजोशी भरा व्यक्तित्व कभी नहीं रहा। और जब मैं इसे देखता हूँ, तो मैं कहता हूँ कि मैंने चर्च के इतिहास में भी शायद ही कभी किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में पढ़ा हो जो इस व्यक्ति के बराबर खड़ा हो सके। और जब मैं इसे देखता हूँ, तो यह मुझे वास्तव में प्यार करने और अच्छा काम करने के लिए प्रेरित करता है।

और मैं चाहता हूँ, मैं चाहता हूँ कि हमारे लोग इनमें से कुछ लोगों को पीछे मुड़कर देखें और कहें, वाह, वे परिपूर्ण नहीं थे। वे भी अपने समय के लोग थे, लेकिन वाह, जॉन इलियट ने इन भारतीयों से कितना अद्भुत प्यार किया और उनके लिए आत्म-बलिदान करते हुए अपना जीवन दे दिया। इसलिए, जॉन इलियट से ज़्यादा गर्मजोशी वाला कोई व्यक्ति कभी नहीं रहा।

देश की स्थिति और साधनों की संकीर्णता तथा युग की असभ्यता को ध्यान में रखते हुए, ईसाई चर्च के इतिहास में दृढ़ निश्चयी, अथक, सफल श्रम का कोई उदाहरण नहीं है, जो मैसाचुसेट्स की मूल जनजातियों की भाषा में संपूर्ण धर्मग्रंथों का अनुवाद करने से बेहतर हो। यह श्रम न तो युवावस्था में किया गया और न ही शैक्षणिक आराम के आलीशान आवासों में, बल्कि एक मंत्री और एक उपदेशक के रूप में अपने कर्तव्यों के निरंतर बोझ के तहत किया गया। अपने जीवन के उस समय जब आत्माएं कमजोर पड़ने लगीं, दूसरे शब्दों में, उन्होंने यह काम एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में किया।

यह आश्चर्यजनक है। और इसलिए, यह जोनाथन एलियट को मेरी श्रद्धांजलि है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि भगवान हमारे समय में भी ऐसे लोगों को खड़ा करें जो प्यार करते हैं और दृढ़ और मेहनती

हैं और पवित्र आत्मा की शक्ति के साथ भगवान की सेवा करते हैं जैसा कि जॉन एलियट ने 1600 के दशक में प्रार्थना करने वाले भारतीयों के साथ किया था।

इस श्रृंखला के लिए धन्यवाद। ईश्वर हमें ऊपर उठाए और पुनर्जीवित करे। हम अपने समय में पुनरुत्थान देखें। धन्यवाद।

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा जॉन एलियट, 1604-1690, भारतीयों के प्रेषित पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 3 है, द एलियट बाइबल, 1663, दूसरा संस्करण, 1685, किंग फिलिप का युद्ध, 1675, और फिर से शुरू करना, और फिर अंत में, जॉन एलियट को अंतिम श्रद्धांजलि।